
लॉटरी
मुंशी प्रेमचंद की एक अमर कहानी
सम्पादक-अनिल वर्मा
चित्रांकन-पराग
यह उन दिनों की बात है जब लॉटरी के टिकट नये-नये आये थे तो मेरे दोस्त विक्रम के पिता, चाचा, अम्मा और भाई सभी ने टिकट खरीद लिये कि कौन जाने किसकी तकदीर जोर मारे। फिर लॉटरी किसी के भी नाम आये, रूपया रहेगा तो घर में ही। मगर...
1,000000
..विक्रम को सब्र नहीं था।
औरों के नाम रूपए आयेंगे फिर मुझे कौन पूछेगा। बहुत होगा दस पांच हजार दे देंगे लेकिन इतने रूपयों से मेरा क्या होगा? मेरे तो जिन्दगी में बड़े-बड़े मंसूबे हैं। पहले तो मुझे सम्पूर्ण जगत की यात्रा करनी है और एक-एक स्थान में कई-कई दिन ठहरकर वहां के रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि का अध्ययन करना है।


फिर एक बहुत बड़ा पुस्तकालय बनवाना है। जिसमें दुनियां भर की उत्तम रचनाएं जमा की जाएंगी। बंगला, कार फर्नीचर तो मामूली बातें हैं। पिता जी या चाचा के नाम रूपए आये तो पांच हजार से ज्यादा का डोल नहीं। और अगर अम्मां के नाम आये तो बीस हजार तक मिल जायेंगे। मगर भाई साहब के नाम आ गए तो मेरे हाथ धेला भी नहीं लगेगा और...
किसी के सामने हाथ फैलाने से तो अच्छा है कि आदमी जाकर किसी गढ्ढे में डूब मरे।
लेकिन विक्रम खुद बेकार था। घर में उसे लाटरी के लिए रूपए कौन देता। उसने एक दिन मुझसे कहा-
क्यों न हम तुम साझे में एक टिकट ले लें
तजवीज तो मुझे भी पसन्द आई है लेकिन मैं तो एक स्कूल मास्टर हूं और..
DOT-N-LINE FEATURES
मुझे बीस रूपए मिलते हैं। दस रूपये का टिकट खरीदना तो मेरे लिए हाथी खरीदने के समान है। हां, एक महीना दूध, घी, जलपान और ऊपर के सारे खर्च जोड़कर पांच रूपए की गुंजाइश निकल सकती है। फिर भी डरता हूं।
तब विक्रम मुझसे बोला-
तुम कहो तो मैं अपनी अंगूठी बेच दूं। कह दूंगा उंगली से फिसल गई। पर तुम्हें साझे के पांच रूपए नकद देने होंगे।


नहीं, यह बुरी बात है। चोरी खुल जायेगी तो शर्मिन्दा होना पड़ेगा और तुम्हारे साथ मुझ पर भी डांट पड़ेगी
तभी मुझे ध्यान आया कि किताबों से ज्यादा बे-जरूरत चीज हमारे पास कोई न थी।
क्यों न पुरानी किताबें किसी सैकन्ड-हैन्ड किताबों की दुकानों पर बेच डाली जाए और उस रूपए से टिकट लिया जाए।
इस सुझाव पर विक्रम भी राजी हो गया। किताबें बेचने की खिदमत विक्रम के सुपुर्द हुई और वह आधे घंटे में दस रूपए का नोट हाथ में लिए उछलता-कूदता आ पहुंचा
अब दस लाख की रकम मिले तो पांच लाख मेरे हिस्से में आयेंगे और पांच लाख विक्रम के हिस्से में।
मैंने सन्तोष का भाव दिखाकर विक्रम से कहा।
पांच लाख कुछ कम नहीं होते
पांच लाख क्या, हमारे लिए तो इस समय पांच सौ भी बहुत हैं भाई। मगर जिन्दगी का प्रोग्राम बदलना पड़ गया मेरी यात्रा वाली स्कीम तो टल नहीं सकती हां, पर पुस्तकालय जरूर गायब हो गया।
मैंने आपत्ति की-
आखिर तुम यात्रा में दो लाख से ज्यादा तो न खर्च करोगे?
जी नहीं उसका बजट है साढ़े तीन लाख का सात वर्ष का प्रोग्राम है भाई। पचास हजार रूपये साल ही तो हुए।


चार हजार महीना कहो। मैं समझता हूं दो हजार रूपए महीना में तुम आराम से रह सकते हो।
मैं शान से रहना चाहता हूं। भिखारियों की तरह नहीं
दो हजार में तुम शान से रह सकते हो
जब तक आप अपने हिस्से में से दो लाख मुझे न दोगे, तब तक पुस्तकालय न बन सकेगा
कोई जरूरी नहीं कि तुम्हारा पुस्तकालय इस शहर में बेजोड़ हो।
मैं तो बेजोड़ ही बनवाऊंगा
इसका तुम्हें अख्तियार है लेकिन मेरे रूपयों में से तुम्हें कुछ भी न मिलेगा। मेरी जरूरतें देखो। तुम्हारे घर में काफी जायदाद है। तुम्हारे सिर पर कोई बोझ नहीं, मेरे सिर पर तो सारी गृहस्थी का बोझ है। दो बहनों का विवाह है। दो भाइयों की शिक्षा है। नया मकान बनवाना है। मैंने तो निश्चय किया है कि..
..सब रूपए बैंक में जमा करा दूंगा और उसके सूद से काम चलाऊंगा। कुछ ऐसी शर्तें लगा दूंगा कि मेरे बाद भी कोई इस रकम को हाथ न लगा सके।
विक्रम ने सहानुभूति के भाव से कहा-
हां, ऐसी दशा में तुमसे कुछ मांगना अन्याय है खैर मैं ही तकलीफ उठा लूंगा, पर बैंक के सूद का दर भी तो बहुत गिर गया है।
फिर एक दिन विक्रम ने मुझसे पूछा-
भई, टिकट किसके नाम रहेगा?
विक्रम के आग्रह पर, न चाहते हुए भी मुझे टिकट विक्रम के नाम होने की मंजूरी देनी पड़ी



एक-एक करके इन्तजार के दिन कटने लगे। स्कूल जाने से पहले और स्कूल से आने के बाद हम दोनों साथ बैठकर अपने अपने मंसूबे बांधा करते थे।
एक दिन बातों-बातों में विवाह का जिक्र आ गया तो विक्रम बोला-
भई, शादी-वादी का जंजाल तो मैं नहीं पालना चाहता। व्यर्थ की चिन्ता और हाय-हाय। पत्नी की नाजबरदारी में ही बहुत से रूपए उड़ जायेंगे।
मैंने उसका विरोध किया-
लेकिन जब तक जीवन में सुख-दुख का कोई साथी न हो तो जीवन का आनन्द ही क्या? मैं तो विवाहित जीवन से इतना विरक्त नहीं हूं।
विक्रम जरूरत से ज्यादा तुनकमिजाजी से बोला-
खैर अपना दृष्टिकोण है। आपको बीबी मुबारक और कुत्तों की तरह उसके पीछे-पीछे चलना। बन्दा तो आजाद रहेगा। अपने मजे से जहाँ चाहा गए और जब चाहा उड़ गये और जब चाहा घर आ गए। यह नहीं कि हर वक्त एक चौकीदार आपके सिर पर सवार हो। जरा सी देर हुई घर आने में फौरन जवाब तलब हुआ, कहाँ थे अब तलक, बच्चे को जरा सा जुकाम हुआ..
..और आप बेतहाशा दौड़े जा रहे हैं होम्योपैथिक डॉक्टर के पास जरा उम्र खिसकी तो लौंडे मौका मिलने पर जहर खिला दें और मशहूर कर दें आपको कॉलरा हो गया था। मैं तो इस जंजाल में नहीं पड़ता
तभी विक्रम की बहन कुन्ती ने इतने धमाके से द्वार खोले कि हम दोनों चौंक पड़े।
तू बड़ी शैतान है कुन्ती किसने बुलाया है तुझे यहां ?


कुन्ती ने खुफिया पुलिस की तरह कमरे में नजर दौड़ाकर पूछा-
तुम लोग हर दम यहां किवाड़ बन्द कर क्या बातें किया करते हो? जब देखो यहीं बैठे रहते हो। कोई जादू मन्तर जगाते होंगे।
हां, एक मन्तर जगा रहे हैं जिसमें तुझे एक दुल्हा मिले जो रोज गिनकर पांच हंटर जमाए।
मैं ऐसे दुल्हे से ब्याह करूंगी जो मेरे सामने खड़ा पूंछ हिलाता रहे। अम्मा के लॉटरी के पचास हजार रूपये मुझे मिल जायेंगे। बस चैन से ऐश करूंगी।
मैं दोनों वक्त ठाकुर जी से अम्मा के लिए प्रार्थना करती हूं। अम्मा कहती हैं कुंवारी लड़कियों की दुआ कभी निष्फल नहीं जाती। मेरा मन तो कहता है अम्मा को जरूर रूपये मिलेंगे।
अच्छा, तुझसे एक बात कहूं। किसी से कहेगी तो नहीं। बात यह है कि हम दोनों ने भी लॉटरी का टिकट खरीदा है। हम दोनों के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना किया कर। अगर हमें रूपये मिले तो तेरे लिए अच्छे-अच्छे गहने बनवा देंगे सच।
बहुत नखरों के बाद कुन्ती को विश्वास आया लेकिन उसके पेट में बात न पची। एक क्षण में सारे घर में यह खबर फैल गई
क्या? विक्रम ने साझे में लाटरी की टिकट खरीदी है।
अब जिसे देखिए वही विक्रम को डांट रहा था।
बैठे-बैठे तुम्हे हिमाकत ही सूझती है। घर में इतनों ने टिकट लिया था फिर तुम्हें लेने की क्या जरूरत थी


और तुम भी मास्टर साहब बिल्कुल घोंघा हो लड़के को अच्छी बातें क्या सिखाओगे और उसे चौपट किये डालते हो।
विक्रम तो लाडला बेटा था। उसे बड़े ठाकुर साहब और क्या कहते। सारा गुस्सा मुझ पर उतारा।
मुझे बचपन की एक घटना याद आ गई। होली का दिन था। शराब की बोतल मंगवाई गई। मेरे मामू साहब उन दिनों आए हुए थे। मैंने चुपके से कोठरी में जाकर ग्लास में एक घूंट शराब डाली और पी गया..
अभी गला जल ही रहा था कि मामू साहब कोठरी में आ गए और मुझ पर इतना बिगड़े कि मेरा कलेजा सूखकर छुआरा हो गया।
और दोपहर ही को मामू साहब नशे में पागल हो कर गाने लगे, फिर रोए। फिर दादा को मना करने पर भी मारने दौड़े और आखिर में कै करके जमीन पर बेसुध पड़े नजर आए।


विक्रम के पिता और चाचा दोनों नास्तिक थे पर अब ईश्वर भक्त हो गये थे। बड़े ठाकुर साहब तो प्रातः काल गंगा स्नान करने जाते और छोटे ठाकुर साहब गठिया से ग्रस्त होते हुए भी राम नाम लिखते रहते थे। विक्रम के बड़े भाई प्रकाश को साधु महात्माओं पर अधिक विश्वास था और माता जी पूरी तपस्विनी बनी हुई थी।
मुझे विक्रम पर सन्देह होने लगा था
कहीं विक्रम ने मुझे हिस्सा देने से इन्कार कर दिया तो मैं क्या करूंगा? या साफ इन्कार कर जाये कि तुमने टिकट में साझा किया ही नहीं।
दूसरे दिन विक्रम ने मुझसे कहा-
कहीं हमारा टिकट निकल आए तो मुझे अफसोस होगा कि नाहक तुमसे साझा किया
सच, लेकिन इस तरह का अफसोस मुझे भी तो हो सकता है।
लेकिन टिकट तो मेरे नाम हैं।
अच्छा, मान लो मैं साझे से इन्कार कर जाऊं
मैं तुम्हें इतना बदनीयत नहीं समझता।
मगर है बहुत संभव। सोचो तो दिमाग चकरा जाता है। पूरे पांच लाख।
तो भई, अभी कुशल है। लिखापढ़ी कर लो। यह संशय रहे ही क्यों?
विक्रम ने हंसकर कहा-
तुम बड़े शक्की हो यार। मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। भला ऐसा कहीं हो सकता है?



किन्तु मुझे उसके इन आश्वासनों पर बिल्कुल भी विश्वास न आया।
यह तो मैं जानता हूं कि तुम्हारी नीयत कभी विचलित नहीं होगी पर फिर भी लिखा-पढ़ी में क्या हर्ज़ है?
तो पक्के कागज पर लिखना पड़ेगा दस लाख की कोर्ट फीस साढ़े सात हजार रूपए हो जायेगी
मैंने सोचा-
बला से सादी लिखा-पढ़ी के बल पर कोई कानूनी कार्यवाही न कर सकूंगा पर इन्हें लज्जित करने का, इन्हें सबके सामने बेईमान सिद्ध करने का अवसर तो मेरे हाथ आ जायेगा।
मैंने कहा-
मुझे सादे कागज पर विश्वास आ जायेगा।
जिस कागज का कोई कानूनी महत्व नहीं, उसे लिखकर क्यों समय नष्ट करें।
मैंने बिगड़कर कहा-
तुम्हारी नीयत तो अभी से खराब हो गई हैं!
तो क्या तुम यह साबित करना चाहते हो कि ऐसी दशा में तुम्हारी नीयत नहीं बदलती।
हाँ, पर..
.. तुम्हें इसी वक्त लेखबद्ध होना पड़ेगा
अगर तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास नहीं हैं तो मैं भी नहीं लिखता
तो क्या तुम समझते हो मेरे रूपए हजम कर जाओगे।
किसके रूपए और कैसे रूपए?



सहसा दीवानखाने में झड़प की आवाज सुन कर मेरा ध्यान उधर चला गया। हम दीवान-खाने के द्वार पर जाकर खड़े हो गये। विक्रम के पिता और चाचा आमने-सामने खड़े हुए थे। मालूम होता था कि हाथापाई होना ही चाहती थी।
छोटे ठाकुर ने कहा-
सम्मिलित परिवार में जो कुछ भी और कहीं से भी किसी के भी नाम आए वह सबका है बराबर
हरगिज नहीं। अगर मैं कोई जुर्म करते पकड़ा जाऊं तो सजा मुझे मिलेगी सम्मिलित परिवार को नहीं।
इसका फैसला अदालत से होगा।
अगर मैं जानता आपकी ऐसी नीयत है तो मैं भी बीबी बच्चों के नाम टिकट ले सकता था।
शौक से अदालत जाइए। अगर मेरे लड़के मेरी बीबी या मेरे नाम लाटरी निकली तो आपका उससे कोई सम्बन्ध न होगा; उसी तरह जैसे तुम्हारे नाम लॉटरी निकलने पर मेरी बीबी, मेरे लड़के व मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं होगा।
DOT-N-LINE FEATURES


यह आपकी गलती है।
इसलिए कि मुझे विश्वास था आप भाई हैं।
यह जुआ है। आपको समझ लेना चाहिए था। जुए की हार-जीत का खानदान पर कोई असर नहीं पड़ सकता। अगर आप कल को दस-पांच हजार रूपये रेस में हार जायें तो खानदान उसका जिम्मेदार नहीं होगा।
मगर भाई का हक दबाकर आप सुखी नहीं रह सकते।
आप न ब्रह्मा हैं और न कोई महात्मा।
विक्रम की माता ने सुना कि दोनों भाइयों में ठनी हुई है और...
..मल्ल युद्ध होना ही चाहता है वह दौड़ी हुई बाहर आई और दोनों को समझाने लगी तो छोटे ठाकुर ने बिगड़ कर कहा-
आप मुझे क्या समझाती हैं? उन्हें समझाइए जो चार-चार टिकट लिये बैठे हैं। मेरे पास क्या है एक टिकट...
..उसका क्या भरोसा? मेरी अपेक्षा जिन्हें रूपये मिलने का चौगुना चांस हैं, उनकी नीयत बिगड़ जाये तो बड़ी लज्जा और दुख की बात है।
ठकुराइन ने देवर को दिलासा देते हुए कहा-
अच्छा, मेरे रूपए में से आधे तुम्हारे। अब तो खुश हो न।
मैं तो एक धेला भी न दूंगा। हम मुरौव्वत और सहृदयता से काम लें, फिर भी इन्हें पांचवे हिस्से से ज्यादा किसी तरह न मिलेगा।


छोटे ठाकुर ने खिसियाकर कहा-
सारी दुनियां का कानून आप ही तो जानते है।
जानते ही हैं। तीस साल तक वकालत नहीं की है?
यह वकालत निकल जायेगी जब सामने कलकत्ते का बैरिस्टर खड़ा कर दूंगा।
बैरिस्टर की ऐसी तैसी। चाहे वह कलकत्ते का हो चाहे लन्दन का।
इतने में विक्रम के बड़े भाई साहब यानि प्रकाश सिर व हाथों में पट्टी बाँधे लंगड़ाते हुए वहां आ पहुंचे। उनकी कमीज भी खून से तर थी।
यह तुम्हारी क्या हालत है जी ऐं, यह चोट कैसे लगी? किसी से मारपीट तो नहीं हो गई?
जी, ऐसी कोई बात नहीं कोई बहुत चोट नहीं लगी।
कैसे कहते हो चोट नहीं लगी तुम्हारा हाथ व सिर सूज गया हैं। कपड़े खून से तर हैं कोई मोटर दुर्घटना तो नहीं हो गई?
बहुत मामूली चोट है साहब दो चार दिन में ही अच्छी हो जायेगी, घबराने की कोई बात नहीं।


लेकिन हुआ क्या? यह क्यों नहीं बतलाते? किसी से मारपीट तो नहीं हुई।
मारपीट किसी से नहीं हुई। बात यह है कि मैं जरा...
झक्कड़ बाबा के पास चला गया था। आप तो जानते ही है कि वह आदमियों की सूरत से भागते है और पत्थर ले कर मारने दौड़ते है..
..हुआ यूँ कि आज जब मैं वहां पहुंचा तो वहां कई लोग जमा थे। झक्कड़ बाबा ने आंखें खोली और जनसमूह को देखा तो पत्थर लेकर उनके पीछे दौड़े..
फिर क्या था, भगदड़ मच गई। लोग गिरते-पड़ते भागे। एक भी आदमी वहां न टिका..
.. अकेला मैं घंटाघर की तरह डटा रहा बस उन्होंने मुझ पर पत्थर बरसा दिये पत्थर मेरे सिर और हाथ पर लगे..


..फिर मैं गिर पड़ा और बेहोश हो गया...
.. जब होश आया तो वहां एकदम सन्नाटा था। झक्कड़ बाबा भी वहां से गायब हो चुके थे..
..किसी तरह उठा और डाक्टर के पास गया
हड्डी टूट गई है। गर्म पानी से से सेंक करना। शाम को मैं तुम्हें फिर देखने आऊंगा।
खैर चोट लगी तो लगी पर अब लॉटरी मेरे नाम आई धरी है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि झक्कड़ बाबा की मार खाकर कोई नामुराद रह गया हो। मैं तो सबसे पहले बाबा की कुटी बनवा दूंगा।
मौका मिलते ही छोटे ठाकुर प्रकाश से बोले-
क्या बहुत जोर से मारते हैं झक्कड़ बाबा?
जोर से! अजी साहब पत्थर नहीं मारते, बमगोले मारते हैं। ऐसा वैसा आदमी हो तो एक ही पत्थर में टें बोल जाये। कितने ही तो..


..मर गए पर आज तक फक्कड़ बाबा पर मुकदमा नहीं चला और वह दो चार पत्थर मारकर ही नहीं रह जाते, जब तक आप गिर न पड़ें और बेहोश न हो जायें, वह मारते जायेंगे। मगर रहस्य यही है कि आप जितनी ज्यादा चोट खायेंगे, उतने ही अपने उद्देश्य के निकट पहुचेंगे।
प्रकाश ने फक्कड़ बाबा का ऐसा चित्र खींचा कि छोटे ठाकुर की पत्थर खाने की हिम्मत ही न पड़ी।
आखिर भाग्य के निपटारे का दिन आया। यानी लॉटरी का नतीजा।
दोनों ठाकुर सुबह से ही मन्दिर में ही ध्यान लगाये बैठे थे।
मैं भी मन्दिर में जाकर भगवान की स्तुति करने लगा।
हे अनाथों के नाथ। क्या तुम्हारी कृपा-दृष्टि हम पर न होगी। तुम्हें नहीं मालूम हमने कितनी मुश्किल से ये टिकट खरीदे हैं तुम्हारी दया हमसे ज्यादा कौन डिज़र्व करता है?
विक्रम नतीजा देखने डाकखाने चला गया तो प्रकाश मिठाई के थाल मन्दिर के द्वार पर खड़े कंगालों को बांटने लगा।


बड़े ठाकुर ने पुजारी की ओर देखा और बोले-
भगवान बड़े भक्त-वत्सल हैं, क्यों पुजारी जी?
हां सरकार, भक्तों की रक्षा के लिए तो भगवान क्षीर सागर से दौड़े और गज को ग्राह के मुंह से बचाया
पूजन समाप्त हुआ। आरती हुई। बड़े ठाकुर ने दो रूपये थाल में डाले और छोटे ने चार रूपए।
सहसा बड़े ठाकुर ने पुजारी जी से पूछा-
तुम्हारा मन क्या कहता है पुजारी जी
सरकार की फत्ते है।
और मेरी?
आपकी भी फत्ते है।
मैं डाकखाने की तरफ चला कि विक्रम मुस्कुराता हुआ वहां आ पहुंचा।
घर में घुसते ही विक्रम बोला-
जिसका नाम आया है उससे एक लाख लूंगा बोलो है मंजूर।
पहले बता तो..


छोटे ठाकुर बिगड़े।
महज बताने के लिए एक लाख। शाबाश!
क्या हमने डाक-खाना नहीं देखा हुआ?
अच्छा, तो अपना नाम सुनने के लिए तैयार हो जाओ। अपने होशों हवास ठीक रखना।
अच्छा, तो कान खोलकर सुनिए, इस शहर का सफाया है। इस शहर का ही नहीं, सम्पूर्ण भारत का सफाया है। अमेरिका के एक हब्शी का नाम आ गया।
कभी नहीं। तीन महीने की तपस्या यों ही रही वाह!
प्रकाश ने छाती ठोंककर कहा-
यहां सिर फुड़वाये और हाथ तुड़वाये बैठे हैं। कोई दिल्लगी है क्या?
बड़े ठाकुर ने झल्लाकर पुजारी को डिसमिस कर दिया।
इसीलिए तुम्हें इतने दिनों से पाल रखा है। हराम का माल खाते हो और ऐश करते हो।


छोटे ठाकुर सर पीटकर बैठ गये। प्रकाश अपना मोटा सोटा लेकर फक्कड़ बाबा की मरम्मत करने चल पड़ा।
मैंने रात को विक्रम से पूछा-
तुम डाकखाने से आये थे तो इतने प्रसन्न क्यों थे?
जब मैंने डाकखाने के सामने हजारों लोगों की भीड़ देखी तो मुझे अपने लोगों के गधेपन पर...
..बहुत हंसी आई। एक शहर में जब इतने आदमी हैं तो सारे हिन्दुस्तान में इसके हजार गुने से कम न होंगे और दुनियां में तो लाख गुने से भी ज्यादा हो जायेंगे और मैंने आशा का एक पर्वत सा खड़ा कर रखा था, वह जैसे एकबारगी इतना छोटा हुआ कि राई बन गया और मुझे हंसी आई। जैसे कोई दानी पुरूष छंटाक भर अन्न हाथ में लेकर एक लाख लोगों को नेवता दे बैठे। और यहां हमारे घर का एक-एक आदमी समझ रहा है कि..
मैं भी हंसा-
हां बात तो यथार्थ में यही है और हम दोनों लिखापढ़ी के लिए लड़े मरते थे। सच-सच बताना तुम्हारी नीयत खराब हुई थी या नहीं?
विक्रम मुस्कुराकर बोला-
अब क्या करोगे पूछकर? परदा ढका रहने दो।
समाप्त
DOT-N-LINE FEATURES

ANIL SERIES HINDI
Price Rs,

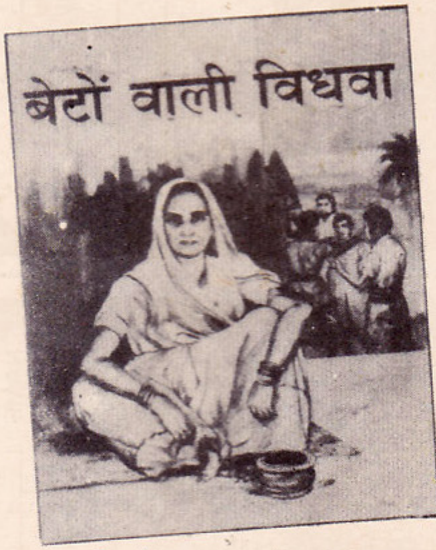
स्टार कॉमिक्स

प्रस्तुत करते हैं।

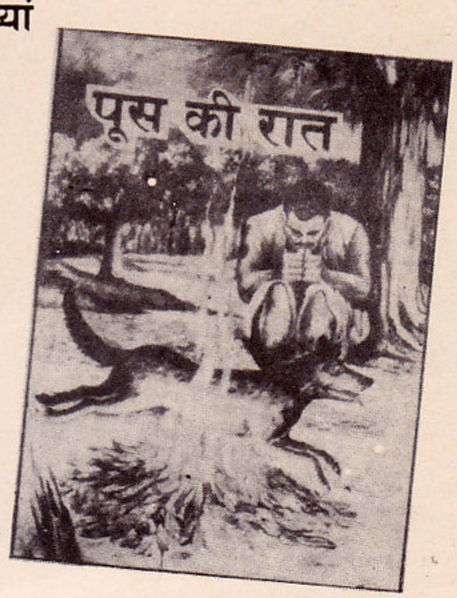
मुंशी प्रेमचंद की कहानियां

भारत भर में पहली बार

कॉमिक्स के रूप में



मूल्य 5/



मूल्य 5/

* बेटों वाली विधवा

* पूस की रात

साथ ही आप के प्रिय

* शंटी बंटी के कारनामे   * पपलू गपलू के कारनामे

* शंटी बंटी व डैडी जी की मैकेनिकगिरी

* पपलू गपलू और अनोखा ख़ज़ाना

आज ही अपने बुक स्टाल से प्राप्त करें या लिखें

स्टार जर्नल्स 50, कालू सराय, हौज़ ख़ास, नई दिल्ली-110016 फोन : 6862675

बिक्री विभाग :— 1641-मोड वाला फाटक, दरीबा कलां, दिल्ली-110006 फोन : 261696

स्टार कॉमिक्स	स्टार कॉमिक्स
नाम ____________	नाम ____________
कक्षा ____________	कक्षा ____________
विषय ____________	विषय ____________